ॐ श्रीहरिः ।

ललनप्रकाश

क़सीदा बर्ताव दुनियवी

अर्थात् ललनसागरका सोलहवां भाग ।

जिसको

फ़र्रुखाबाद निवासी ठुमरीबनायक पं० ललन-पिया ने भक्तमनोरञ्जनार्थ ललित व सरल भाषा के शब्दों में विरचित किया ।

प्रथमबार

लखनऊ

बाबू मनोहरलाल भार्गव, बी. ए., सुपरिंटेंडेंट के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के यन्त्रालय में छपा

सन् १९१५ ई०

हक़ तसनीफ़ महफ़ूज़ है बहक़ नवलकिशोर प्रेस ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीगणेशाय नमः ॥

ललनप्रकाश

अर्थात्

क़सीदा बर्ताव दुनियाबी ॥

दोहा ॥

केतकि पल्लवयुत सुमन गौरि कर्ण शुभ साज ॥ शम्भु ललन गहि सुख धरैं प्रमुदित मन गणराज ॥ १ ॥ पेखि पार्वति ललन कृत हँसि मुख चुम्बन लेत ॥ सिद्धि सदन गणपति सुखद पूर्ण करिय मम हेत ॥ २ ॥ इष्टदेव मम नँदललन छिन छिन करहुँ प्रणाम ॥ प्रणवों शिव गुरु पद्मपद जनमन पूरक काम ॥ ३ ॥

शेरख़ानी तर्ज़ें मसनवी ॥

हम लोग शराफ़त के हमेशः ग़ुलाम हैं ॥
चहिते नहीं हराम की कौड़ी छदाम हैं ॥ १ ॥
ल्याक़त न जिस्को उस्से न करते कलाम हैं ॥
रहते हैं दूर दूर से करते सलाम हैं ॥ २ ॥
ना क़द्र के पास होके निकलते नहीं कभी ॥
उस्की जो हो वो रास्ता, चलते नहीं कभी ॥ ३ ॥
नामर्दों को न मर्दुमी बख़्शी है ख़ुदाने ॥
मर्दों को भी नामर्दी न बख़्शी है ख़ुदाने ॥ ४ ॥
जिस्को न अपनी बात न इज़्ज़त का ख़्याल है ॥
उस पै हमें क्या होता सभी को मलाल है ॥ ५ ॥
ज़र से न बढ़के बात जो होती जहान में ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कहता न कोई कुछ बुरों भलों की शान में ॥ ६ ॥
ज़ाहिर तो बात ही से हो इन्सान का ईमान ॥
सच्ची ही मुहब्बत के बस में भी रहे भगवान ॥ ७ ॥
जहँ बात की औक़ात् नहीं लात वहां है ॥
जो दे ललन्पन् उस्की फिर समात कहां है ॥ ८ ॥
दुनियां में न कुछ बात की औक़ात् जो होती ॥
फिरतो वो जैसा संग था वैसा ही था मोती ॥ ९ ॥
अपने करम धरम को न जानै तो फिर किसै ॥
द्विज को मुनी भगवत् को न मानै तो फिर किसै ॥ १० ॥
नर देह पा न सत्य को जानै तो फिर किसै ॥
भगवत् के भक्त को न पिछानै तो फिर किसै ॥ ११ ॥
धन पानही परिणाम सुधारै तो फिर किसै ॥
अपनी तरफ़ न आप निहारै तो फिर किसै ॥ १२ ॥
क्या अप्ना तन् और अप्ना धन् यह मान रहे हो ॥
भूले कहां हो किस्पे कर गुमान रहे हो ॥ १३ ॥
इस भूल ने किस्को न दुखाया है अन्त में ॥
करनी का फल न किसने ही पाया है अन्त में ॥ १४ ॥
अन्धा भी हो वो जान सकै है यह बात को ॥
सारी बुराइयों भलाइयों की घात को ॥ १५ ॥
बाअक़्ल हो बाइल्म हो वह क्यों नहीं जानें ॥
पस जान् बूझ के जो कोई इस्को न मानें ॥ १६ ॥
उनका सुयश के कूंचे में कैसे निबाह हो ॥
यमराज के घर उनकी न क्योंकरके चाह हो ॥ १७ ॥
वो पाप का है बाप जो लालच हो उस्का मीत ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उस्को कलंक उस्की दिलाती है जो अनीत॥ १८ ॥
लाया है साथ कौन कौन लेके जायेगा॥
सब ह्यां का ह्यां रहेगा दिया है सो पायेगा॥ १९ ॥
जिस घर में आके पैदा हुये तुम हो बताओ॥
घर ज़र ज़िमीं किस्की हुई न तुम लिये जाओ॥ २० ॥
आजाओ अगर होश में अबभी तो भला है॥
नहिं हाथ होगी झाड़ू अपयश का डला है॥ २१ ॥
इस् फ़ेल को अच्छा ही अगर जान रखा है॥
तौ कीजिये वही जो कि पहिचान रखा है॥ २२ ॥
जैसा करोगे फ़ेल तो फल वैसा हि होगा॥
आईने में ज्यों देखो देख तैसा हि होगा॥ २३ ॥
हां पुण्य का जबतक नहीं आता है जिस्के छोर॥
तब तक ही उस्को माफ़ है औगुन करे करोर॥ २४ ॥
हरगिज़ किसी के हक़ में बुराई न कीजिये॥
दीनो दुखी के मुँह की भी हाई न लीजिये॥ २५ ॥
देकर ज़बां बदल्ना कमीनों का काम है॥
झूंठा हो समझना वो हरामी गुलाम है॥ २६ ॥
पुन्यों को पाप ही तो घटादेते हैं जल्दी॥
पापों को पुन्य ही वो जलादेते हैं जल्दी॥ २७ ॥
पुन्योंहि से यम दूतों से पाला पड़े नहीं॥
सुख भोग हर घड़ी मिलैं जाये चला कहीं॥ २८ ॥
आदर करे किसीका निरादर न उस्का हो॥
बैरी जहां में कोई बिरादर न उस्का हो॥ २९ ॥
दुनियां में होसके करै सत्कार सभीका॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कुछ दे न सके तौ करै उपकार सभी का ॥ ३० ॥
उपकार के फल का नहीं कुछ ओर छोर है ॥
देने से दान राज़ी हो नँद का किशोर है ॥ ३१ ॥
इस पुन्य की महिमा को नहीं वेद गा सकें ॥
मुनि देवता न शेष शारदा बता सकें ॥ ३२ ॥
राजा रईस राव बादशा नवाब हो ॥
इस पुन्य ही से इन्द्र की पदवी जनाब हो ॥ ३३ ॥
इस पुन्य के बस में हैं देवी देवता सारे ॥
आवागमन से जीव को यह पुन्य निवारे ॥ ३४ ॥
इस पुन्य से परमात्मा के धाम सिधारे ॥
इच्छा जो कुछ हो आन के वो भोग बिहारै ॥ ३५ ॥
पुन्यात्मौं के वास्ते जन्मै है विधाता ॥
भक्तों पै पड़ै भीर तुरत आ वो मिटाता ॥ ३६ ॥
जाना न जिस्ने दान के मज़े का रस कभी ॥
दुखिया रहा जहान में जन्मा जभी तभी ॥ ३७ ॥
सत्कार व उपकार के रस जो पगे हुए ॥
वो हर बलाके दुख से हमेशः भगे हुए ॥ ३८ ॥
नरतन यह दान करने ही से होता है सफल ॥
हरि भक्तिदान करने हीसे हो सुफल प्रबल ॥ ३९ ॥
दानी वो हरिश्चन्द्र करन बलि भुवाल का ॥
झंडा खड़ा जहां में है जिसके जमाल का ॥ ४० ॥
शिखिध्वजका धरम देखिये टाला नहीं वचन ॥
आरे से अपना चीर कर खवादिया सुवन ॥ ४१ ॥
प्रन पुन्य उस्का देखकै भगवत ने निहाला ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हरिभक्ति मिली हरि मिलै अरु जीउठा लाला॥ ४२॥
जो करने में कुकर्म के लज्जा न कुछ करैं॥
अंजाम में चाहें कुछभी हो उस्से न कुछ डरैं॥ ४३॥
उस फ़ेल का होताहै फल यहां का यहीं पर॥
तिसपर भी जो कम्बख़्त न सोचैं ज़रा मगर॥ ४४॥
धन पाके धनी पाप के बन करके नाशलें॥
जो हो बनी बिगाड़ के उस्को बिनाशलें॥ ४५॥
शेख़ी वो पाप की रखैं दिल अप्ने में अनाप॥
मानो वोही हों सगरे ही पापों के आप बाप॥ ४६॥
कारीगरी करैं वो चाल घात में नई॥
करते दग़ा न देर करैं ऐसे निर्दई॥ ४७॥
छलसे छलैं किसी को तौ फूले न समावैं॥
मूंछों को उमेठैं कभी गालों को बजावैं॥ ४८॥
है मन् काही धन चाहे दग़ाबाज़ी भी कर देख॥
आख़िर को हो कुयश फ़रेब्बाज़ी भी कर देख॥ ४९॥
सत् का ही सत् जहान में चाहे सो सचाये॥
जग में सुखी वही जो कर ऊंचे को उठाये॥ ५०॥
जो कर रहे कर ऊंचा उन्हैं देखिये ज़रा॥
फूले फले वो कैसे हैं परेखिये ज़रा॥ ५१॥
बद को तो बादशाह भी देता ही दंड है॥
भगवत् के ह्यां वो कैसे हो सक्ता अदंड है॥ ५२॥
सब करने लगें जग में जो बदकाम अच्छा हो॥
भाये न किसे उस्का जो अंजाम अच्छा हो॥ ५३॥
नहिं काम भलों का जो भलाई को छोड़ दें॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

और दिल से पुन्य दानकी जो रुचि को तोड़ दें॥ ५४॥
सेवा जो शराफ़त का है ज़ेबा शरीफ़ को॥
यहि काम लियाक़त का है ज़ेबा शरीफ़ को॥ ५५॥
शफ़्क़त शरीफ़ छोड़ै तो उसका ज़वाल हो॥
नाख़ुश ख़ुदा भी उस्से हमेशः कमाल हो॥ ५६॥
पाये वो अमनो चैन में अपने ख़राबियां॥
रंजो अलम की आके सतायें सिताबियां॥ ५७॥
आजाये होश में किये तौबा ही फिर बनै॥
दुनियां में दर रहे नहीं दिल दुख में आ सनै॥ ५८॥
ज़ाहिर उसे तब होता है बदकाम का अंजाम॥
दुखियों में दुख को रोता है बैठै कलेजा थाम॥ ५९॥
अपनी तो अपने हाथ बिगाड़ो या बनाओ॥
चहि नाम करो जग में चहे लोग हँसाओ॥ ६०॥
सिर्फ़ अपनी अपनी शर्मो हया का ख़याल है॥
नहिं जग में सभी इस्सूं क्या भला चँडाल है॥ ६१॥
मिलना बशर का चोला कमना यह कमाल है॥
इस्से न जो बनाली तो बनना मुहाल है॥ ६२॥
यों तो जहां में गुह के भी कीड़े की जून है॥
हरि को न कोई पासके बशर बिदून है॥ ६३॥
होकर बशर न जाना बशर को तो क्या किया॥
यों तो न क्या हैवान ने हां जन्म आ लिया॥ ६४॥
हैवां की ज़ात होती इसीसे सुबूत है॥
जिस्को न धर्माधर्म आदमियत की कूत है॥ ६५॥
क़ायल उसी के सब हैं जो ल्याक़त का आदमी॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दूर उस्से रहें जो बे लियाक़त् का आदमी ॥ ६६ ॥
इन्सानियत् हि नाम दिलाती जहान में ॥
नूरो शुहूर क़द्र बढ़ाती जहान में ॥ ६७ ॥
थू उस्पै है जिस्की न बात पर हो बात गर ॥
काला मुँह उस्का जो कि न साक़िर हो क़ौलपर ॥ ६८ ॥
ज़र पाके जो ज़र दार कुछ सवाब भी केरत ॥
मतलब से गिरैं फिर भी न आज़ाब से डरते ॥ ६९ ॥
नुक़्सान चहें सौगुना होजाये खुश रहें ॥
फूटी तो सहें आंखी को हरगिज़ नहीं सहें ॥ ७० ॥
बद फ़ेलके करने में न हरगिज़ मुरें कभी ॥
मुफ़्ती भी हो सवाब तौ हरगिज़ न लें कभी ॥ ७१ ॥
कोइ आके छिनरपन की जो बातों को सुनावें ॥
उन्को बड़े सुखप्यार से सर पर ले बिठावें ॥ ७२ ॥
सत् कर्म जो करने को कहे मुँह को छिपावें ॥
देखें न उस्के रूबरू नज़र न उठावें ॥ ७३ ॥
भड़ुआई जो करै उसै तो अपना बनावें ॥
जो हों सगे दुरावें उन्हैं मुँह न लगावें ॥ ७४ ॥
खोंटा है ज़मानेका हाल कुछ न पूंछिये ॥
बहू बहिन् से दें कुचाल कुछ न पूंछिये ॥ ७५ ॥
मौसी चची फुफी के सास के गले लगैं ॥
पावें जो पड़ोसी की बहू बेटी ले भगैं ॥ ७६ ॥
ऐसी जहां में रस्म अधर्मों की छारही ॥
शुभकर्म पै नज़र न कुकर्मों पै आरही ॥ ७७ ॥
कोई करे सुकर्म न हों उसके सँगाती ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करते किसी को देखैं तो उन्की फटे छाती॥ ७८॥
देवै जो दान कोई तो उन्को मलाल हो॥
मिल्ते किसी को देखैं तो छाती में साल हो॥ ७९॥
रुतबा किसी का देखैं तो सांसैं भरैं जरैं॥
मत्लब ग़रज़ न कुछ भी हो उन्सो हसद करैं॥ ८०॥
आप अच्छे से अच्छे जो हों वो माल उड़ावें॥
देवों को जो पूजैं तो सड़ी वस्तु चढ़ावें॥ ८१॥
विप्रों को जिमावें अगर तौ इस प्रकार से॥
मद्दी से मद्दी भाजी सो लावें बज़ार से॥ ८२॥
धरदें उबाल नोन मसाला भी न डालें॥
पशुओं की सानी सम बिचारे विप्र भी पालें॥ ८३॥
रबड़ी मलाई दूध मिठाई के ठिकाने॥
तोला शकर में छांछ पानी पाउ भर आने॥ ८४॥
सो भी दुबारा देते क़स्मसाप दिल् बड़ा॥
लाला यों ब्रह्मभोज करें करके दिल् कड़ा॥ ८५॥
आवे अतिथि जो द्वार तौ लल्कार भगावें॥
कुछ और कहे तौ उसे द्वैचार सुनावें॥ ८६॥
बेबस हो बाप दादा के दिन विप्र जिमावें॥
बरुओं को देते दक्षिणा भौं नाक चढ़ावें॥ ८७॥
कोइ द्विज की जो कथा सुनैं तो स्वार्थ समेतै॥
अप्ने न घर बिठावें मांग आन निकेतै॥ ८८॥
सौ मुद्रा चढ़ाने का जो संकल्प उठालें॥
ग़ैरों की चढ़त में से काट फांस लगालें॥ ८९॥
ज़्यादा जो चढ़त आगई तौ मद में बहु भरैं॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

फिर सौ के बदले अन्त में पचीस ले धरैं॥ ९० ॥
यक टका करें पुन्य करें लाख टका पाप॥
दोनों जहां के हों बुरे पंडितका लेवें शाप॥ ९१ ॥
घर का हो उतारन वो बसन पात्र चढ़ावें॥
परिणाम की नेकी बदी को कुछ न डरावें॥ ९२ ॥
दुनियाँ में अब् जो धर्म सो इस् तौर होरहा॥
मतलब् के सिवा पुन्य पर न गौर होरहा॥ ९३ ॥
बातें बहुत करैंगे मीठि मीठि बना के॥
भलमन्सी अभी सिर्फ़ बातों ही में जताके॥ ९४ ॥
निर्धन जो कोई करे पुन्य दान विचारा॥
मक़दूर उसे क्या कहें यह झूठ है सारा॥ ९५ ॥
अप्ने सिवा न और को लायें निगाह में॥
औरों को दोषदें चहें पड़ें गुनाह में॥ ९६ ॥
कोइ भक्त जब धनी को निर्धनी जो बुलावें॥
घर उस्के हरिचरित् को सुन्ने को न जावें॥ ९७ ॥
आवे जो बुलावा तौ घरैयों से यों कहें॥
कहि दो कि घर नहीं हैं आप मौन ह्वैरहें॥ ९८ ॥
और उल्टा करें शिकवा जो मिल जायें कहीं पर॥
क्या हमसे ख़फ़ा थे जो हमें की नहीं ख़बर॥ ९९ ॥
क्या एक दो रुपों के भी लायक़ नहीं थे हम॥
हम्को यह आप्की तरफ़ से रहा बहुत् ग़म॥१००॥
सच्चे को झूठा करते न देरी करैं ज़रा॥
चहि पाप शाप कित्ना हो नहीं डरैं ज़रा॥१०१॥
यों कहिने लगैं जान गये आपका मन्सब॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सोचा दिल अप्ने आपने होगा यही मत्लब ॥१०२॥
हम इन्को बुलायेंगे जाना इन्के पड़ैगा ॥
नहिं देंगे बुलावा नहीं ब्योहार बढ़ैगा ॥१०३॥
पर देने के न आंक् पै फिर भी कभी आयें ॥
बेशर्मी की हँसी को हँम्के बात बनायें ॥१०४॥
ऐसे लफंगों को वो ज़रर पहुँचता है यार ॥
कि एक की जगह पै हों बरबाद यकहज़ार ॥१०५॥
सच कौवा जो स्याना हो बहुत गूही खाये है ॥
काना हीं कुल जहान में कहा भी जाये है ॥१०६॥
एहसान किसी पै करै वो दान न समझै ॥
जो दान को करै तौ फिर एहसान न समझै ॥१०७॥
एहसान समुझ दान में कल्यान नहीं हो ॥
भागी हो उल्टा पाप का सुखवान नहीं हो ॥१०८॥
हरि के चरित को बिन बुलाये जाके जो सुनै ॥
उस् नर को देवयोनियों में हरिका जन गुनै ॥१०९॥
जो लोग दिखावे को आ कथा से भगत हैं ॥
जग में तो ऐसोंहीं को कहैं बगुलाभगत हैं ॥११०॥
या तो न हरिचरित्र को सुन्ने ही को जाये ॥
नहिं जाने हीं के पाप सोई सर पै लदाये ॥१११॥
जाये तौ पूरा हरिचरित को सुनके तब आये ॥
औंघाये न बतराये किसी से न उभाये ॥११२॥
वक्ता के वचन सुन हिये बिश्वास को लाये ॥
भगवत् के चरित्र सुन्ने में हित चित को लगाये ॥११३॥
जाये न नित तौ रुचि को न जाने से हटाये ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रद्धा घटाये दुख उठाये नर्क में जाये॥११४॥
दुनियां के काम करने में बन्दी नहीं ज़रा॥
हरि के चरित्र सुन्ने को छुट्टी नहीं ज़रा॥११५॥
छुटकारा हरिचरित् से जो रखते हैं अजापी॥
उन्को समझना चाहिये कि पूरे हैं पापी॥११६॥
पापी के कोई सींग तो लगे नहीं होते॥
पुन्यात्मा हरिजन के सींग भी कहीं होते॥११७॥
बर्ताव से हर एक का खुल्ता है खुलासा॥
हरिभक्त कौन कौन न हरिभक्ति बिलासा॥११८॥
यक् तो कथा में जातेही दुश्वारी हो मलूम॥
आयें तौ हरिचरित् का सुन्ना भारी हो मलूम॥११९॥
बैठे तो कथा सुन्ने को घर जाने की पड़ी॥
घर जाने की न फिक्र तौ कमाने की पड़ी॥१२०॥
दुबधा में जिन्का मन है हरिचरित में क्यों लगै॥
दिल् दान् धर्म करने के रस् से न क्यों भगै॥१२१॥
पापों की सवारी तो उन्के दिल् में बँधी है॥
विषयादि प्रपंचों की रुची दिल्में सँधी है॥१२२॥
फिर हरिके चरित् दान् धर्म से न क्यों हटैं॥
पापों के मारे उन्हीं अनीती सो क्यों घटैं॥१२३॥
मानैं जो हरिचरित् को दिल् अपने कर बड़ा॥
हरिगुन के सुन्ने में जो हो नुक्सान भी कड़ा॥१२४॥
हरियश को दोष तब् भी कोई जो न लगाये॥
हरि उस्को अपना भक्त देखि दूना फलाये॥१२५॥
सत् कर्म्म से कभी न हानि हो यह सांच है॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करता वो दिल्में भक्त की भक्ती को जांच है ॥१२६॥
मुझ पै मेरे चरित् पै है विश्वास के नहीं ॥
निश्चय वो किसी के जो दिल् में देखले कहीं ॥१२७॥
फिर तो उसे फूलों फलों से ऐसा फलावे ॥
सुखिया वो करे धूम जिस्की जगमें दिखावे ॥१२८॥
सुन्ने गये कथा जो कर्मबस् हुई कुछ् हानि ॥
देने लगैं वो हरिगुनों को दोष घर पै आनि ॥१२९॥
जो हरि को हरिचरित् को कोई दोष लगाता ॥
हरि उसको दया मया वो अपनी से दुराता ॥१३०॥
जो यह कहै कि बच गये इतनै हुआ नुक्सान ॥
हरि के चरित्र सुन्ने के फल से ही रही शान ॥१३१॥
हरि उस्से हों निहाल उसे भी निहाल दें ॥
कुल हानि आफतों के वो दुखसे निकाल दें ॥१३२॥
सहिले जो तमाचा यह कोई हरि की जांच का ॥
झोंका न लगै उसको कभी कोई आंच का ॥१३३॥
जिस्ने उसे सब योग जान मान रखा है ॥
उस्ने ही कुल जहान के मज़ों को चखा है ॥१३४॥
इन्सां के जो कुछ बसमें हो तौ क्या न वो करले ॥
फिर कौन रबको मानै अगर वो न खबरले ॥१३५॥
उस्के जो बन रहे हैं खुश वो हैं जहां में ऐन ॥
उस्को जो भुलाये हैं उन्हैं हो न कभी चैन ॥१३६॥
जब दुष्ट न उस्को समझते मद्में समाते ॥
सुर सन्त द्विजों को वो जभी जग्में सताते ॥१३७॥
नाशै वो उन्हैं आनके मद उन्का मिटाये ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जप् तप् औ दान् धर्म के रुतबे को बढ़ाये ॥१३८॥
नर होके हरिगुन् को जो नज़र में न लाये ॥
वो कैसे इस जहान् में सुख शान्ती पाये ॥१३९॥
हरिका हुआ न जो न वो किसी जहान् का ॥
भोगी न होसके कभी अम्नो अमान् का ॥१४०॥
हीले से भी किसी के सुन् मिलै जो हरिचरित् ॥
उस्को भी अपना पुन्य का फल जान् सुनै नित् ॥१४१॥
जो बगुलाभगत हो उसे न पास बिठावे ॥
चिक् चिक् न हरिचरित् में बैठ करके मचावे ॥१४२॥
जो हरिचरित् में सोवै दूसरों को सुलावे ॥
आप होवे भागी पाप का औरों को बनावे ॥१४३॥
उस्के न पास बैठे बिठाये न पास में ॥
औगुन् न किसी के तकै अपनी तलाश में ॥१४४॥
जैसा करेगा वैसाही उस्को मिलैगा फल् ॥
देखे रहे अपने को हुआ चाहे जो निस्मल् ॥१४५॥
अपनी हीकिनी पार लगावे है हमेशः ॥
दुख सुख् का जो कुछ भोग भुगावे है हमेशः ॥१४६॥
रक्खै विचार अपने धर्म कर्म का सदा ॥
कहे उस्से सवाया सो कर दिखाये सर्बदा ॥१४७॥
जो कुछ कहे करै कुछ सज्जन न जानिये ॥
होवे धनी भी उस्को सभ्यजन् न जानिये ॥१४८॥
मुँह से कहे करै सो वो इन्सां असील है ॥
जो कुछ कहे करै न वही कमअसील है ॥१४९॥
इन्सान हो इन्सानियत से बाज़ जो रहे ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उस्को सिवा बुरे के भला कौन फिर कहे ॥१५०॥
इस् चन्द रोज़ा ज़िन्दगी में कुछ सबाब ले ॥
न हो सबाब तो न किसी का अज़ाब ले ॥१५१॥
है ज़िन्दगी मिस्ले सरांय का टिकासरा ॥
होगा सुबह सफ़र न जिस्का कुछ भी आसरा ॥१५२॥
दम् दम् के साथ् हैं न दम आई तो क्या कुछ् है ॥
इसपै गुमां करै तो वो फिर आक़िला कुछ है ॥१५३॥
अच्छा भला हो बैठा लगे मरते न देरी ॥
पाके अनित्य तन् कमाये पाप की ढेरी ॥१५४॥
कुछ् दान करै पुन्य करै अन्त बनाये ॥
इस् मगमें चलै आप् भी औरों को चलाये ॥१५५॥
जाने हैं सब् जहान् में देना ही सार है ॥
वेदो मुनी देवों कि भी येही पुकार है ॥१५६॥
भगवत् ने भी तो यही कहा बार बार है ॥
देने के बराबर न कोई शय सुखार है ॥१५७॥
जप्ता रहे हरि नाम जो बनि आये दे सो दान् ॥
उस्से न कभी विमुख तीन काल हो भगवान् ॥१५८॥
इस् जग में जिये जब्लो सभी ऐशकर मिलैं ॥
मरने पै इस्से सौगुना सुख भोग ज़र मिलैं ॥१५९॥
दे आया उस्ने पाया अब् जो दे सो पायेगा ॥
देवै जो न कुछ पाये न कुछ दुख उठायेगा ॥१६०॥
देने का चवेना जो करके आये कर् रहे ॥
सोई वो दुख उस्करनी के कारन से भर् रहे ॥१६१॥
आगे न दिया दुख मिले अब् दें जो कुछ नहीं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गर नर हुये दरिद्र को फिर भोगैंगे कहीं ॥१६२॥
इस् हाथ दे उस् हाथ ले वो दान् में फल है॥
खाली न जाये तीन काल यों सो अचल है॥१६३॥
सौदा जो कर गया जहान् में सवाब का॥
बेटा वो बादशाह का हुआ या नवाब का॥१६४॥
हरि पै जो धन् लुटागये हरि के वो होगये॥
आवागमन से छूट उसी घरके होगये॥१६५॥
इस् दान् की महिमा को जो जाने वोही माने॥
मूरख हो अधर्मी हो कब् इस् रस्को पिछाने॥१६६॥
अब् तो वो दानी रहिगये मतलब् से दान् दें॥
एहसान करें दान् का सौ से बखान् दें॥१६७॥
कहिदे जो दान् देके किसी से वृथा हो सब॥
भगवत् न सराहे न अपना पाये वो मन्सब॥१६८॥
करना जो गुप्तदान इसी से भला कहा॥
हो लाख गुना फल सुरों ने धर्मला कहा॥१६९॥
गाके बजाके दान करै जो सप्रेम के॥
वो हो सुफल्प्रदा सहित् आनंद क्षेम के॥१७०॥
सब् कुछ करै भी दान पै न हरिमें प्रेम हो॥
तौ उसके दान में कभी न यश न छेम हो॥१७१॥
दे दान शेखी मारे तो शेखी ही हाथ हो॥
नेकी न उसको जगत में कीरति के साथ हो॥१७२॥
शेखी ही ने अर्जुन का मान भंग कराया॥
प्रेमै ने कर्णभूप को हरिदर्श दिलाया॥१७३॥
दिर्योधनो ने मद् से हरि से मान न पाया॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शिबरी के जूठ बेरों को प्रेमै ने पवाया ॥१७४॥
शेखी ने मद् गरुड़ का सो हनुमत् से तुड़ाया ॥
हरि साग अलोना बिदुर का प्रेम से खाया ॥१७५॥
पटरानियों का मान शमन शेखी ने किया ॥
रुक्मिन के सिवा कोई नहीं बन् सकी सिया ॥१७६॥
यक लाख पुत्र जिस्के सवालख रहे नाती ॥
शेखी ने न रावन का रखा जगमें सँगाती ॥१७७॥
क्या मेघनाद कुम्भकरण महारावना ॥
औ हिर्नाकश्यपादि कों का क्या बतावना ॥१७८॥
वश प्रेम के हनुमान के श्रीराम होगये ॥
बलि भूप के वश् प्रेम के घन्श्याम होगये ॥१७९॥
कुबरी ने सुदामा ने प्रेम से सगा लिया ॥
शेखी ने गोपियों से श्याम को जुदा किया ॥१८०॥
इस् प्रेम ने किस् किस्का न रुतबा बढ़ा दिया ॥
शेखी ने न किस् किस्का मान् बध् करादिया ॥१८१॥
शेखी बुरी जहान् में शेखी न कीजिये ॥
दर्दो दया व प्रेम के प्याले को पीजिये ॥१८२॥
बद् काम् का अंजाम् बुरा है न कीजिये ॥
जीते जी जहां में सुयश से नाम लीजिये ॥१८३॥
जग्में है नाम जिस्किसी का वही अमर है ॥
इस नाम के सिवा न कोई शय अय बशर है ॥१८४॥
यश् निधि में न डूबै न नाम् काल खा सकै ॥
दिये दान् के सिवा न कोई नाम् पा सकै ॥१८५॥
अब तो वो लोग रह गये हैं जग्में देखिये ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करता हो कोई दान मना कर्‌दें पेखिये ॥१८६॥
सत्कर्म की सलह जो कोई ले किसी से गर ॥
खोटी सिखायें सीख न आमादा हो बशर ॥१८७॥
उस्की बिगाड़ैं अपनी बिगाड़ैं बनी हुई ॥
बातैं उसे सुझायें वो लालच सनी हुई ॥१८८॥
आमादा किसी को जो सत्कर्म पै देखलें ॥
दिल उसका रुजू हर तरह उस्पै परेख लें ॥१८९॥
पहिले ही पिछल बैठैं आप रुख न मिलायें ॥
आते उसे जो देखैं दूर दूर बरायें ॥१९०॥
शामिल न होवें और जो होना पड़े कहीं ॥
लाखों बहाने बाज़ी बताने लगैं वहीं ॥१९१॥
कोइ ले जो पकड़ हाथ कि मानैंगे नहीं हम ॥
तो अधमरे से जायें जहां होय सत करम ॥१९२॥
नित आने का वादा जो कोई उनसे करावें ॥
कानों पै हाथ धर के जीभ दांतों दबावें ॥१९३॥
फ़र्मायें हम हैं साफ़ गो कहेंगे साफ़ साफ़ ॥
हम रोज़ ना आयेंगे नहीं कहते हैं ख़िलाफ़ ॥१९४॥
हरि गुन्‌का तो सुन्ना बड़े नसीब से होवै ॥
बे भाग दिल को कौन सुधासिन्धु में धोवै ॥१९५॥
पापी को हरिचरित्र तोप का मुहार है॥
उस्को वहां का बैठना हीं दोषवार है॥१९६॥
जिस्की कि सुधर आई सुधरने को है आगे ॥
हरिगुन वो सुन सकें हैं जिस्के भाग हों जागे ॥१९७॥
कहने की न सुन्ने की बात कुछ न कहानी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वो जीव खुदही जान् लेगा होगा जो ज्ञानी ॥१९८॥
यक घर् में कथा हो न सुनें दूसरे घरके ॥
कूंचे के न बैठैं चहें आजायें नगर के ॥१९९॥
खा पीके सो रहें न जायें हरिसमाज में ॥
डूबे रहें वो धन्पती होने की लाज में ॥२००॥
कोइ गर कहे उन्से कि तुम् हो कैसे पड़ोसी ॥
हरिगुन हो घरके पास न सुन्ते बड़े दोसी ॥२०१॥
तो कहदें खाट पै पड़े पड़े सुना करैं ॥
घर बाल् बच्चों की खबर लिये रहा करैं ॥२०२॥
हम को जो मज़ा आता है तुम्को न आयेगा ॥
कोई किसी से झांपै ना हँसै हँसायेगा ॥२०३॥
हम सोते रहें मौजसे पलंग बिछाये ॥
करवट इधर उधर की लेवैं बीड़ी चबाये ॥२०४॥
चहिं टांग पसारैं हैं चहें टांग उठायें ॥
घरवाली से मन् चाहें कभी हँसैं हँसायें ॥२०५॥
तुम एक जगह बैठै तो उठना न होसके ॥
पंडित को तके रहते हो जैसे कि भौंचके ॥२०६॥
हो तुम् भले कि हम् भले इन्साफ़ की है बात ॥
पूछैं जो कोई उन् से तो वो इस् तरहँ इतरात ॥२०७॥
दुष्टों के नाश होने की करनी यही गनों ॥
सुख के विनाश होने की करनी यही जनों ॥२०८॥
हरि के चरित्को खेल तमाशा समझ लिया ॥
कुछ हरि को न समझैं मन् आया सोई कहदिया ॥२०९॥
खाट अपनी व्यासगद्दी का दादा समझ रहे ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हेच् हरिचरित कहानी से ज़्यादा समझ रहे॥२१०॥
पंडित से भी पोथी से भी आप ऊंचे बैठते॥
धन के गुरूरमें भरे इस तौर ऐंठते॥२११॥
होना विनाश होय तब हो यों कुमती है॥
हरिगुन् का जो अदब् न करै हो कुगती है॥२१२॥
ज़र जाये ज़िमी जाये जोरू जाये सन्तती॥
ऐसे अधर्मियों को दुख दरिद्र हो अती॥२१३॥
बैठै जो व्यासगद्दीसे आसन् लगा के ऊंच॥
रौरव नरक में जाये औ करजाये ऐश कूंच॥२१४॥
हरि के चरित् का जो न रखे अपने दिल् से मान॥
उनका तो तीनों काल में होवे नहीं कल्यान॥२१५॥
देखै जो कहीं होरही हो हरिकथा तहां॥
थिरहो ज़ुरूर सुन्ले पांच बोलही वहां॥२१६॥
हरि के चरित् को जो कोई निदराये चला जाय॥
हरिका हो वो दोषी बे शिर नवाये चलाजाय॥२१७॥
हरिगुन के जो सुननेकी मन् अभिलाष रखताहै॥
उन्का वो दिल हमेशह हरि हुलास रखता है॥२१८॥
संसार असार में है सार हरिका भजन और॥
उपकार दया दान हरिचरित सुनै बग़ौर॥२१९॥
चाहें जो अप्ने जन्म का सुधार सुधारै॥
सुरसन्त वेदवाक्य सुख चहैं तो अधारै॥२२०॥
बनना मुहाल होवै बिगड़ना मुहालना॥
बनी हुई बिगाड़ले तो कुछ कमालना॥२२१॥
हरका ही होने में तो है हर हाल भलाई॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुमरन करै न उसका तो बेहद बुराई ॥२२२॥
उस नँदललन की याद में लगा रहे हमेश ॥
होवे नहीं दुखेश वो बना रहे सुखेश ॥२२३॥
मेरी समझ में आई जो वो तुम को सुझाई ॥
मानों न मानों ये तुम्हें अख़्त्यार है भाई ॥२२४॥
मेरे तो ललनपन से येही दिल् में समाई ॥
जो है कन्हाई का कन्हाई उसका सहाई ॥२२५॥
धारै जो ललनपन वो मेरी बात ना मानै ॥
टारै जो ललनपन वो मेरी बात प्रमानै ॥२२६॥
मानै तो वो रस ऐसा चखै कि वोही जानै ॥
घर जानै जगत् जानै तिहूं लोक बखानै ॥२२७॥

इति श्रीद्विजवरपंडितललनपियाविरचितललनप्रकाश-
पूर्वार्द्ध समाप्तम् ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ ललनप्रकाशोत्तरार्द्धः ॥

बर्ताव सरीफ़ों को जो आये पसन्द हैं ॥
सो मुख़्तसिर से तुमको सुनाते वो चन्द हैं ॥ १ ॥
मैंने तो जबसे होश सम्हाला है जहां में ॥
सैयाई में न जानूं रहा कहां कहां में ॥ २ ॥
अब जो है ज़माने का वो बर्ताव जताते ॥
धर्मा अधर्म की है कहानी सो सुनाते ॥ ३ ॥
यक साल कहीं बांसबरेली को गये हम ॥
बांची कथा अलखिया की बगिया में उसी दम ॥ ४ ॥
जब होने लगा हरिचरित्र गाना बजाना ॥
थोड़े दिनों के बाद चन्द लोगों ने जाना ॥ ५ ॥
था ज़ुल्फ़िकार गढ़ का एक वैश्य शिरधनी ॥
ज्वालाप्रसाद नाम धन का था शिरोमनी ॥ ६ ॥
उसने मुझे बुला के बइज़्ज़त मकान पर ॥
हो दस्तबस्ता यों कहा भक्ती का भाव भर ॥ ७ ॥
मन्दिर में मेरे आप हरिचरित को सुनावो ॥
सावन का है उत्सव यहां आनन्द उड़ावो ॥ ८ ॥
हमने कहा कथा तो होरही है हमारी ॥
उठजाय वो तो सुनना जो हो मरजी तुम्हारी ॥ ९ ॥
कहने लगा कि दिन में कथा बांचते हो ह्वां ॥
मन्दिर में मेरे रात को सुनाइये ह्यां ॥ १० ॥
जहँ बांचते हो उनसे भी कहलाय दूंगा मैं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जो कुछ कहेंगे तो उन्हें समझाय दूंगा मैं॥ ११॥
इस तौर से कह सुन कथा हमरी बिठाई॥
हमने भी बांचना शुरूकर हितसे सुनाई॥ १२॥
हर साल पुरोहित् की उनके होती थी कथा॥
उन्होंने जो सुना तो उन्को होगई व्यथा॥ १३॥
उन्के मुनीमजी कहीं थे उन्के ही यजमान॥
गिरने वो कूए में गये बीच उनके ही मकान॥ १४॥
तब उनको तसल्ली उन्होंने कह के बँधाई॥
आ गुप्त कथा में मेरी उपाधि उठाई॥ १५॥
करने लगें हम अर्थ तो टोंका किया करे॥
इज़्ज़त हमारी आके उसी दम् लिया करे॥ १६॥
सब कुछ मना किया वो बमिन्नत भी न माना॥
तब रोष हमारे भी दिल के बीच समाना॥ १७॥
पुस्तक की पुट्ठी ले झुरा के हमने जो मारी॥
वो गुप्त गिरा भड़भड़ा के खाके पछारी॥ १८॥
चट बांधके पुस्तक उठा के अपना तँबूरा॥
इक्के पै बैठ घर का लिया रास्ता पूरा॥ १९॥
अनुचित मुनीम की पै न कुछ भी कहा धनी॥
उल्टा हमी को दोषी बनाय महा धनी॥ २०॥
हम् भी न कथा बांचने को फिर गये वहां॥
उन्का बुलावा आया हमें ठहरे थे जहां॥ २१॥
सब कुछ कहा फिर हम् भी बम्हनई पै आगये॥
उन्के गुमास्ते भी रुख़ हम् से हटा गये॥ २२॥
देखा न गया हमसे हरिचरित् का निरादर॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठाना प्रयोग हमने भी अम्बा को मनाकर ॥ २३ ॥
नित पांच कवित्तों को अम्बिका को सुनाना ॥
हरिगुन् के विमुखियों की क्षय हमेश मनाना ॥ २४ ॥
दुर्गा ने तो कुछ ऐसी की सुनवाई हमारी ॥
उसका दिवाला होगया अधमास मँझारी ॥ २५ ॥
अम्बे को भी हरिगुन् का निरादर नहीं भाया ॥
जैसा किया उन्होंने नतीजा वो उठाया ॥ २६ ॥
हरिजन् को द्विजको हरिचरित् को कोई दुरावे ॥
उस् करणी का फल वैसाही वो जगमें कमावे ॥ २७ ॥
हम जग्में घूमते हैं हरिचरित् को सुनाते ॥
अपनी भी बनाते फिरैं ग़ैरों की बनाते ॥ २८ ॥
हम् को सबाब् भी हो जक्क को सबाब् भी ॥
यहि रति सुमति के मिल्ने का है ढँग जनाब् भी ॥ २९ ॥
जो दान् पुन्य करता है वो अप्ने वास्ते ॥
एहसान इस्में कुछ नहीं किसी के वास्ते ॥ ३० ॥
जिन्को बनाना है वही अप्नी बनाते हैं ॥
सुन् हरिचरित् को दान् भी देते दिलाते हैं ॥ ३१ ॥
पापी हैं जो उन्को न हरिचरित् सुहाते हैं ॥
जीते जी वो कथा न घर अप्ने बिठाते हैं ॥ ३२ ॥
सुनिये अब एक और नया हाल सुनायें ॥
दुनियां में जो अनीत हुई तुमको जतायें ॥ ३३ ॥
आया जो मैं यक साल कानपूर में भाई ॥
धनियों ने धूम गाने के सुन्ने की मचाई ॥ ३४ ॥
गाने का मुझे शौक़ भी कविता का शौक़ था ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

॥ पेशा न था न दोनों फन् में कुछ भी शौक़ था ॥ ३५ ॥
बहुतों ने बुलाया गया बेउज्र बेउज्ररत ॥
॥ तस्नीफ ओ गाने से किया शाद बेनफ़रत ॥ ३६ ॥
यक दिन का ज़िक्र लाला शिवपरसाद ने यादा ॥
॥ थे रेल के खज़ाञ्ची न धन में कुशादा ॥ ३७ ॥
सरकार में इज़्ज़त बढ़ा हुआ जमाल था ॥
॥ निज देश रऊसाओं से जिन का विसाल था ॥ ३८ ॥
कुलपूज्य पुरोहित गुनी पंडित प्रमान कर ॥
॥ गायक बिदेशी विप्र कवीश्वर पिद्धान कर ॥ ३९ ॥
कुल् दोस्त बिरादर धनी थे बोल पठाया ॥
॥ मार्देङ्गि सरंगीश सहित गान कराया ॥ ४० ॥
सुन् गान् शायरी को हुये जो वो खुश् कमाल ॥
॥ कुछ देना चाहा नहिं लिया उनको हुआ खयाल ॥ ४१ ॥
बोले कि कथा तुम्हरी हम सुनैंगे सुनाओ ॥
॥ कब्से अरंभ करियेगा उस् दिन् को बताओ ॥ ४२ ॥
दो दिन के बाद फिर भी बुलाया यही कहा ॥
॥ आरम्भ कथा होने का दिन कौन्सा रहा ॥ ४३ ॥
मँगवा के पत्तरा मुहूर्त मुझसे शुधाया ॥
॥ दिन चार बाद वो मुहूर्त मैंने बताया ॥ ४४ ॥
बढ़ने लगी नाशिस्त हम् से उन्से दिन् बदिन् ॥
॥ रोज़ाना तस्करा रहा कथा का छिन् बछिन् ॥ ४५ ॥
आया मुकर्रा वो रोज़ मिल्ने मैं गया ॥
॥ बोले हो शाद मुझसे वो शर्मा सहित दया ॥ ४६ ॥
शुरूआत का दिन आज है चल देखिये गुरू ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तज़्बीज़े मकां दो हैं कहां करियेगा शुरू ॥ ४७ ॥
होती थी राजगद्दी वो घर खोल दिखाया ॥
ठाकुरदुवारे शुरू होने को बताया ॥ ४८ ॥
यों कहिके साज पोथी मेरे ह्यां से मँगाई ॥
चौकी मँगाकर व्यासगद्दी तिसपै सजाई ॥ ४९ ॥
साजे फरशफुरूस सुन् के आये लोगबाग ॥
पधरा के पोथी पगधुलाये मेरे सानुराग ॥ ५० ॥
इतने में उनके भाई कुछ आ मसबरा किया ॥
एकान्त में लेजा न जाने क्याहि कहदिया ॥ ५१ ॥
मुझसे बुलाके बोले सुनो गुरू जी महाराज ॥
रखिये अरम्भ मुल्तवी कथा का अभी आज ॥ ५२ ॥
और दूसरी साइत कोई सी देख लीजिये ॥
उस दिन् से आ कथा को शुरू आप कीजिये ॥ ५३ ॥
सबकुछ कहा शुरू तो आज होने दीजिये ॥
अपमान हरिचरित का न ऐसा करीजिये ॥ ५४ ॥
अटकाव कोई होवे तो दो चार दिन के बाद ॥
होजायगा शुरू तभी से कथा का संवाद ॥ ५५ ॥
लगती है उठीपेंठ आठदिन के पिछारी ॥
आप इसपै ख़्याल करिये तजके सोचा बिचारी ॥ ५६ ॥
बर्ताव ये हरगिज़ नहीं अच्छा दुखारा है ॥
अपमान हरिचरित का है हमरा तुम्हारा है ॥ ५७ ॥
भाई की सलाह पै हुये आरूढ़ वो ऐसे ॥
रावन ने बिभीषण की नहीं मानी थी जैसे ॥ ५८ ॥
हमतो लेसाज पोथी अपने डेरे को आये ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ह्वां उठगये बिस्तर औ लोग बैठे बिठाये ॥ ५९ ॥
लोगों ने तस्करा इधर उधर जो जा किया ॥
जिस्ने सुना बुरा कहा अप्जस उन्हें दिया ॥ ६० ॥
हमरी कथा रईस दूसरे ने बिठाई ॥
जिसकी कि कानपुर में मच गई थी दुहाई ॥ ६१ ॥
दो तीन कथा और भी बांचीं शहर के बीच ॥
लाला को कथा सुन् न मिली गह के सुलह नीच ॥ ६२ ॥
अपना हरिचरित् का तो खाली नहीं जाता ॥
हरजन का निरादर भी कभी हरि को न भाता ॥ ६३ ॥
अनरीति का कारण ज़रा दिल में परेखिये ॥
कुछ दिन् में लौट गया फट्टा उन्का देखिये ॥ ६४ ॥
सारी ललाई जाती रही जात पात में ॥
परिणाम बुराई का मिला थोड़ी बात में ॥ ६५ ॥
हरि की कथा तो सात पांच की है लाकड़ी ॥
ऐसे न पर उपकार पै तबियत जरा लड़ी ॥ ६६ ॥
उस्से न कर्म धर्म कोई दान होसके ॥
नरजून में भी उस्का न कल्यान होसके ॥ ६७ ॥
चण्डाल दानों देव जून नर से प्रकाशै ॥
जो होनहार कर्मठी हो तुर्त विकाशै ॥ ६८ ॥
आवे जो अप्ने देश भवन में विदेशिया ॥
साधू गुनी अतिथि हो विप्र कवि स्वदेशिया ॥ ६९ ॥
सत्कार होसके करे सत्कार यथोचित् ॥
उपकार होसके करे उपकार यथोचित् ॥ ७० ॥
दोनों से जो बाज़ आये तो दो का नहीं गनों ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ऐसों से दुबारा जो मिलै तो ललन्पनों ॥ ७१ ॥
ना क़दरे अधर्मी से न दुश्मन को मिलावे ॥
भूंखा चहे मरै दई ये दुख न दिखावे ॥ ७२ ॥
इन्सान हो इन्सान की जो क़द्र ना करै ॥
हरियश का ना ग्राहक उसे भगवत् ना आदरै ॥ ७३ ॥
चाहे भला तो हरिचरित् से प्रेम लगावै ॥
सुमिरै हरी का नाम कामना को पुरावै ॥ ७४ ॥
नर जन्म बार बार न मिलने का यार है ॥
नरतन को पाके करनी को लेना सुधार है ॥ ७५ ॥
स्याबस है उस् के तात मात नर के गात् को ॥
हरिका जो होरहे उसे धनि उस्की जात् को ॥ ७६ ॥
जो नँदललन् का होरहा ललन वो धन्य है ॥
उस्से ही सदा रहता नँदललन प्रसन्य है ॥ ७७ ॥
सच् बोलै जो हरि गुन् से हरिके जन्से रखे प्रेम ॥
हरदम् खुश् उस्से हरि रहें जीते जी रहे छेम ॥ ७८ ॥
जो हरिचरित् हरी के जन् से भेद रखै है ॥
लाखों फितूरो फन्द मज़ा दुख् का चखै है ॥ ७६ ॥
तिस् पर भी न मानै नहीं ध्याने लवारिया ॥
कर लेवें अपना छिन में नाश सुख हजारिया ॥ ८० ॥
इस कलि कठिन कराल में ये चाल चली है ॥
कुल् दान् दया धर्म की रुचि दिल् से ठली है ॥ ८१ ॥
बिन् दान् पुन्य के नहीं मिटता आवागमन् ॥
होता न पुन्य दान् बिन् निहाल नँदललन् ॥ ८२ ॥
दानी ही को भगवान् अपने लोक बसाये ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वे दान वो है जग् के सारे भोग भुगाये ॥ ८३ ॥
जिसने दिया वो पा रहे देवै सो पायेगा ॥
इस् दान् का ही जल्वा वो जग में दिखायेगा ॥ ८४ ॥
हो दाम् से न नाम् दाम् से जो हो सो हो ॥
हो जाय स्वयं श्याम् दाम् से जो हो सो हो ॥ ८५ ॥
अपने धर्म पै जो चलै कल्यान सदा हो ॥
ललनों की धन् की सुख्की वृद्धि मान् सदा हो ॥ ८६ ॥
अपने सराहे भाग बन पड़ै जो कर्म धर्म ॥
बिन समझे सुख् के आये येही हरि दया का मर्म ॥ ८७ ॥
आया सो जायगा जो है पैदा वो है ना पैद ॥
चहैं देव हो दानो हो चहे चाँद हो खुर सैद ॥ ८८ ॥
फिर इस अनित्य तन्से जो कुछ भी न शुभ किया ॥
उस्ने जहां में आके नरजनम वृथा लिया ॥ ८९ ॥
नेकी ही के जल्वे का जहां में जमाल हो ॥
चाहे ग़नी ग़रीब गुनी चाण्डाल हो ॥ ९० ॥
हरिकीर्तन् से हरिभजन कथा पुरान से ॥
जिसने न जी लगाया अप्ने धर्मो दान से ॥ ९१ ॥
उस्का फल उस्को ह्यां का ह्यांहि मिल्ता है यारो ॥
देखो सुनो सोचो तो ज़रा समझो बिचारो ॥ ९२ ॥
मेरे कथन् में मेरी भलाई नहीं सब् की ॥
होता वही जो कर्म में या मर्ज़ी जो रब् की ॥ ९३ ॥
सूझा सो सुझाते चहें चेतो या न चेतो ॥
कुछ ज़ोर किसी पै न खुशी दिल की है येतो ॥ ९४ ॥
अबतो न ललनपन् है तुम्हारा जो चितायें ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ललनों के बाप जो हो उन्हें क्या ही सिखायें ॥ ६५ ॥
फिर हम तो ललन खुदही ललन् की सुनेगा कौन ॥
अपनी अक्लि के साम्हने दुनियांकी अक्ल पौन ॥ ६६ ॥
यक साल का चर्चा गया मैं अपने मकाँ पर ॥
हिंडोलों के जल्से में था महजूद वहांपर ॥ ६७ ॥
यक लखपती बेवा जो कि नामी सावित्तरी ॥
उसने पठाया मेरे पास अपना मन्तरी ॥ ६८ ॥
जल्सेमें सामिल् होने को मुझसे जो आ कहा ॥
मैंने कहा बर्ताव उस्से अपना जो रहा ॥ ६९ ॥
तुम सुन्सको कथा जो हमारी हम आयेंगे ॥
भगवत् के रूबरू जो जान्ते वो गायेंगे ॥ १०० ॥
लेंगे कथा बिठाल जल्से के ही पेश्तर ॥
मंजूर गरहो ऐसा तो हाज़िर हैं बराबर ॥ १०१ ॥
मंजूर की मन्दिर में कथा अपने बिठाई ॥
पोथी को पूज कथा सुनी प्रीति बढ़ाई ॥ १०२ ॥
जल्से में तो दिन् तेरह जान् मारी कराई ॥
मतलब् को अपने काढ़ के भौं नाक चढ़ाई ॥ १०३ ॥
कुछ टीप तमस्सुक जो ऐसी बातों का होता ॥
तो काहे को कोइ अपने हक़ में खाता यों ग़ोता ॥ १०४ ॥
हमने जो कहा कुछ तो और मद्में समाकर ॥
यक दूसरे विदेशिया पंडित को बुलाकर ॥ १०५ ॥
फिर उस्की उसी गद्दीपै कथा को बिठाया ॥
अपनी जो शराफत् थी उसे करके दिखाया ॥ १०६ ॥
कोई करै अनीती न भगवत् को सुहाती ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करनी जो जिस्की हो वो उस्के आगेही आती ॥१०७॥
पहिले तो भ्रात उस्का मुआ बाद यह हुआ ॥
पण्डित विचारा वो भी अपनी जान्से खुआ ॥ १०८॥
दीनों पै भी तो वोही द्याल रहिता हमेशः ॥
भक्तों का भी तो वोही भला चहिता हमेशः ॥१०९ ॥
मेरी कथा सदया उस्की कुछी दिनन् में ॥
गइ बैठ दूसरी जगह अपने ही वतन् में ॥११०॥
जो कुछ वहा पै मिल्ता उस्से तिगुना मिल् गया ॥
मीठे सबर के फल् को पा दिल् दूना खिल् गया ॥ १११ ॥
फक उन्का होगया मुँह दिल्में लजा गये ॥
पंचों में अधर्मी हुए झूठे कहा गये ॥११२॥
उसपर भी न चेते तो फिर यों हानि उठाई ॥
व्यवहारियों को देकै वित्त पूरी गँवाई ॥ ११३ ॥
फल ह्यांका ह्यां मिलै है कभी जाय न खाली ॥
इस् हाथ दे उस् हाथ ले कलियुग की प्रनाली ॥ ११४ ॥
अब और यक बयान सुनाते हैं साहिबो ॥
दुनियां की अब जो रस्म बताते हैं साहिबो ॥ ११५॥
रैगायां जिला सीतापूर में है एक गाम ॥
निर्मल अनन्दसिंह ह्यांके धनियों का है नाम ॥ ११६ ॥
उन्के यहां जो हम् गये बहुतै हुये मगन् ॥
सुन्ने को कथा हमरी का दीन्हा हमें वचन् ॥ ११७॥
खत जन्माअष्टमी पै उन्हों ने यों पठाया ॥
बजवइयों सहित हम को कथा सुन्ने बुलाया ॥ ११८ ॥
जब अपने घर के द्वारपै कथा को बिठाया ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तो ब्रह्मचर्य धार ने का बीड़ा उठाया ॥ ११६ ॥
दो चार दिन् तो ऐसा किया बाद फिर उस्के ॥
विषयों ने सताया तो वो मन अपने को मुस्के ॥ १२० ॥
उस् पाप् से घर उन्का रोगने आ दबाया ॥
मैया को उनकी दमा का आज़ार होआया ॥ १२१ ॥
पड़ते ही इस विपति के हरिचरित से उभाने ॥
पापों के मारे बुद्धि कुछ रही न ठिकाने ॥ १२२ ॥
बन्दी कथा की करदी हरिचरित् को दुराया ॥
पोथी न पूजी आप् न औरों से पुजाया ॥ १२३ ॥
ग्रामों में अपने सारे बुलावा दिला दिया ॥
सब कुछ कथा के नाम से धनको मँगा लिया ॥ १२४ ॥
वो धन् को लेके अप्ने घरमें जमा किया ॥
बजवैयों को कुछ दे हमें बैरँग बिदा किया ॥ १२५ ॥
चलते पै कहदिया कि जो धन उघ के आयेगा ॥
घरपर तुम्हारे मनीआर्डर से जायेगा ॥ १२६ ॥
फिर कौन किसे देता है हो बैठे आप मौन ॥
कई मास गुज़र गये न पैसा दिया न पौन ॥ १२७ ॥
ऐसे अधर्मियों पै ग़ज़ब क्यों नहीं पड़ता ॥
परमात्मा के दिल अधर्म क्यों न वो हड़ता ॥ १२८ ॥
संकरवर्ण से ब्याह सन्तती का उन् किया ॥
भाई बिरादरी ने हाल जाना कुछिया ॥ १२९ ॥
ठाना विवाह बाग़ शिवस्थापना करी ॥
खिंच बैठे सभी उनसे भाई औ बिरादरी ॥ १३० ॥
थोड़े ही दिनके बाद उन पै यों विपत पड़ी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

॥ दश पांच सहस खर्च होके वो टली घड़ी ॥ १३१ ॥
भगवतचरित का जोकि निरादर किया रहा ॥
॥ पंडित को पोथी पूज न कुछ भी दिया रहा ॥ १३२ ॥
उस्का वो फल मिला कि सब जहान् ने जाना ॥
॥ हम् को तो हरिकी मेहर से धन दूना भिथना ॥ १३३ ॥
बिश्वास अब जहां में कहो किस का कीजिये ॥
॥ धनियों ने धर्मदान तजा क्या करीजिये ॥ १३४ ॥
निर्धनियों की जो चर्चा करे किसके रूबरू ॥
॥ उनपै जो दोष कोई धरै किसके रूबरू ॥ १३५ ॥
जो रंक हैं उनको तो फिर भी रब का ख़्याल है ॥
॥ धनियों को कुछ अधर्म पै न हो मलाल है ॥ १३६ ॥
धन के घमंड में न देव सन्त को मानैं ॥
॥ धनके घमंड से न दया धर्म को जानैं ॥ १३७ ॥
धनके घमंड में नहीं कुलपूज को परचैं ॥
॥ धनके घमंड से न कौड़ी धर्म में खरचैं ॥ १३८ ॥
धन के घमंड से न विप्र वेद को सेवैं ॥
॥ पोथी पुरान हरिचरित् पै प्रीति न देवैं ॥ १३९ ॥
धन के घमंड से न गुनी गुरु को अँगावैं ॥
॥ पंडित अतिथि कबी को न मुख अपने लगावैं ॥ १४० ॥
धन के घमंड से न पाप करते डरावैं ॥
॥ अनरीति वो अनीति को न ध्यान में लावैं ॥ १४१ ॥
तत्काल फल को पाते हैं फिर भी न लजावैं ॥
॥ छोड़ैं न बान खोटी खुदाई को सगावैं ॥ १४२ ॥
यों यों चलन जहान में छाये अनेक हैं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पापों के पुंज कौन गिनाये अनेक हैं ॥१४३॥
दुनियां से मुहब्बत औ सच्च उठ गया बहुत ॥
हम् दर्दी सगावट का रस्म गुम गया बहुत ॥१४४॥
बेटे न बाप में न भाई में भयत्व है ॥
जोरू औ खसम् में भी नहीं हित् का तत्त्व है ॥१४५॥
ग़ैरों का पूरा पास करैं शिरपै बिठायें ॥
अप्नों का मान भी न करैं दूर दुरायें ॥१४६॥
सत्कर्म की जो उन्से कोई बात चलाये ॥
कानों पै हाथ धरने लगैं मन को न भाये ॥१४७॥
हरिगुन् तो जो हरिभक्त हैं उन को ही सुहाते ॥
पापी को नहीं हरिचरित्र ख़्वाब में भाते ॥१४८॥
सौदा ख़रीद हरिचरित का जो कोई लेवै ॥
घाटा न हो कभी उसे हरि सौगुना देवै ॥१४९॥
चाहें सो कोई देखले परीक्षा लेकर ॥
विश्वासी को तिहुँ काल न पहुँचै ज़रा ज़रर ॥१५०॥
हरिहेतु पै जो जन् कि धन् का बीज बोगया ॥
दुनियां के सुखको साथ ले सब दुख को खोगया ॥१५१॥
हरि का ही दिया तन् बसन् अशन् औ धाम धन् ॥
अपना जिसे है मान रक्खा उस्का तू कवन् ॥१५२॥
जिस्का उसे न देकै बेईमान कहाता ॥
अपयश के सिवा हाथ में कुछ भी नहीं आता ॥१५३॥
करनी जो बेसमझ की कोई ऐसी अधारै ॥
उस्को भला भगवत् कहो क्यों करके दुलारै ॥१५४॥
उस्का जो तनो धन सभी कुछ मान् रहे हैं ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भोगी वही सुखभोग के प्रधान रहे हैं॥१५५॥
वेदो पुराण देव मुनी भान रहे हैं॥
जानैं जो ज्ञान मान उसे मान रहे हैं॥१५६॥
चाहें हो वृद्ध जुवान बटुक अज्ञ जर अजर॥
उस को न कौन जानेहै ऐसा कोई बसर॥१५७॥
दुखमें सिवाय उस्के कोई काम न आवे॥
फिर उस्को हितावै न वो सुख कैसे मितावे॥१५८॥
उल्फ़त् जो दुतर्फ़ा हो तो फिर क्या न सुख मिलै॥
वो कौन सी कीरति है जिस्का गुल नहीं खिलै॥१५९॥
माता उदर में उस्से न क्या क्या क़रार हो॥
साक़िर न फिर उस्पै रहे क्योंकर न ख़्वार हो॥१६०॥
सोचो तो फिर है कौन प्रबल उस्के मा सिवाय॥
उस्में जो रमै उस्से नवै धनि वो नर की काय॥१६१॥
भागै जो उस्से है ललन्पन् उस्का जानिये॥
मूरख न कोई उस्की सरिस और मानिये॥१६२॥
उस्का जो ललन होरहे वोही तो ललन है॥
उस्से जो लौ लगाये सुखद वोही लगन है॥१६३॥
हरि के चरित से ज्ञान भुक्ति मुक्ति पद मिलै॥
निर्वाणपद बेहद प्रमोद यश विशद मिलै॥१५४॥
दाता वो मनोकामना का हरिसुयश जिसै॥
हित से न अँगाये अभागी जानिये तिसै॥१६५॥
चेतो अचेत चित् से अविद्या को निकालो॥
अलगाओ बद् आलस्य को आपे को सम्हालो॥१६६॥
खोलो दिली परदे को भजन्भाव के करसे॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उजियाला करके निकलो अन्धकार के घरसे ॥१६७॥
नरतन् को सफल करलो नँदललन को ध्यायकर॥
हो जाओ उस्का रूप उस्के गुनको गायकर॥१६८॥
है चार छः अठारा अठारा का यह मता॥
यहि न्याय महाभाष्य उपनिषद् में है पता॥१६९॥
सारे मुनी महंत संत साधु देवता॥
कोविद कवीश्वरादि गाथ से जनावता॥१७०॥
दूरै है दुई करने से इन्ही दो काम को॥
कुछ देना उस्के नाम् पै भज् उस्के नाम को॥१७१॥
कर्णी की इन्ही तर्णी पै अनुकूलिये ललन॥
हर में हरी है हरिसे न प्रतिकूलिये ललन॥१७२॥

इति श्रीकविवरपण्डितज्वालाप्रसादसूनुविद्वद्वरनादविद्याविचक्षणपण्डित-
ललनपियाविरचितो ललनप्रकाशः (कसीदा) समाप्तः॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पं० ललनपियाकृत पुस्तकें ॥

ललनचन्द्रिका सटीक	।)
ललनफाग	।)
ललनविलास अर्थात् ललनसागर का छठवां भाग	=)॥
ललनकान्ता अर्थात् हरिश्चन्द्रनाटक ललनसागर का सातवां भाग	≡)
ललनलतिका	=)॥
ललनसुधाकर अर्थात् ललनसागर का नवां भाग	–)॥
ललनविनोद	।–)
ललनसागर	॥।)
अनिरुद्धपरिणय	=)॥
ललनकजरी	)॥
ललनप्रभाकर अर्थात् ललनसागर का द्वितीयभाग	=)
ललनप्रदीपिका अर्थात् ललनसागर का पांचवां भाग	≡)
अष्टयाम	।)
रामायण भजनावली	–)
काशीभजनावली	–)
सीतारामसंयोगपदावली	=)
भजनसंग्रह	=)॥
सियवरकेलिपदावली	≡)॥
श्रीविष्णुगीतावली	=)॥
अर्ज़पत्रिका	=)
गोपीचंदभरथरी	–)
भरथरीचरित्र	)॥।

नीचे लिखी पुस्तकें पण्डित ललनपियाकृत छपकर तय्यार हैं मँगाइये विलम्ब न कीजिये।

१ ललनप्रमोहिनी, २ ललनप्रमोदिनी अर्थात् शत्रुमर्दन दुर्गाचालीसी, ३ ललनकवित्तावली, ४ ललनरसिया, ५ ललनप्रकाश अर्थात् कसीदा बर्ताव दुनियवी, ६ ललनरत्नाकर, ७ ललनरसमंजरी, ८ ललनप्रबोधिनी, ९ ललनशिरोमणि अर्थात् धर्मपताका, १० धर्मध्वजा अर्थात् ललनमंत्रिका, ११ बारहमासा सनातनधर्म, १२ हनुमान्साठिका, १३ हनुमान्शतक, १४ बद्रीनाथयात्रा, १५ ललनोद्वाहपद्यावली, १६ ललनवाद्याभरण, १७ प्रह्लादनाटक, १८ औषधिरत्नमाला अर्थात् ललनकलानिधि।

मिलने का पता:—

रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस–लखनऊ.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor